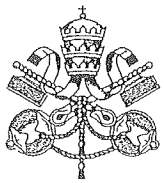

परमधर्माध्यक्षीय अन्तर–धार्मिक संवाद परिषद

ईसाई एवं इसलाम धर्मानुयायी:
शांति की सभ्यता के विकास के लिए बुलाए गए हैं

रमादान के समापन पर सन्देश
"ईद अल–फितर 1428 H./2007 A.D.

वाटिकन शहर

प्रिय मुसलमान मित्रों,

1. परमधर्माध्यक्षीय अन्तर–धार्मिक संवाद परिषद की ओर से, आपके हर्षित उत्सव "ईद अल–फितर" के सुअवसर पर, जिसके साथ आप रमादान का महिना–लम्बा रोज़ा एवं प्रार्थना अंत करते है, मुझे आपसबों को मैत्रीपूर्ण एवं हार्दिक अभिनन्दन भेजते विशिष्ट आनन्द का अनुभव हो रहा है। मुसलिम समुदाय के लिए यह महिना हमेशा एक महत्वपूर्ण समय होता है, और यह समुदाय के हरएक सदस्य को अपने व्यक्तिगत, परिवारिक और सामाजिक जीवन जीने की नयी शक्ति प्रदान करता है। यह महत्वपूर्ण है कि हम सब अपने धार्मिक आस्था का निर्वाह एक समग्र जीवन एवं सृष्टिकर्ता के योजनानुरूप करें; एक ऐसा जीवन, जिसमें हम सभी, अन्य धर्मों के सदस्यों और दूसरों का हित चाहने वालों की एकता एवं सद्भावना में, सर्वसाधारण की भलाई की इच्छा रखकर, अपने भाई–बहनओं की चिंता एवं कद्र हेतु, एक साथ काम करें।

2. इस कठिन समय में, जिसे होकर हम गुजर रहे हैं, हरएक धर्मावलम्बी का, ईश्वर के सेवक के रुप में, सर्वप्रथम यह कर्तव्य है कि वह हर जगह, धार्मिक स्वतंत्रता को ध्यान रखकर, अन्य व्यक्ति एवं समुदाय के धार्मिक आस्था का सम्मान करते हुए, शांति के लिए काम करे। धार्मिक स्वतंत्रता का अर्थ हमें सिर्फ धार्मिक पूजा–पाठ की स्वतंत्रता नहीं समझना चाहिए, बल्कि यह अन्तर–आत्मा की स्वतंत्रता का एक अनिवार्य तत्व है, जो हर व्यक्ति का अधिकार और मानव अधिकार के कोने का पत्थर है। यह इसे जरुरी मानती है कि शांति की सभ्यता और आपसी सद्भावना का निर्माण तभी हो सकता है, जब हरएक व्यक्ति, हिंसा का, जो कभी भी धर्म से प्रेरित नहीं हो सकता क्योंकि वह मनुष्य में विद्यमान ईश्वरीय रूप को ज़ख्म करता है, हर संभव त्याग, निंदा और प्रतिषेध कर, पूरे हृदय से एक भ्रात्रीय समाज के निर्माण के लिए अपने को समर्पित करे। हम सभी जानते हैं कि हिंसा, विशेषकर आतंकवाद, जो विवेकहीन रुप से वार करता और असंख्य निर्दोष लोगों को अपना शिकार बनाता, किसी संघर्ष का हल नहीं कर सकता, और जो सिर्फ मानवता और समाज को कमजोर बनाने के लिए, विनाशकारी घृणा को ही बल देता है।

3. धार्मिक अनुयायियों के रूप में, यह हमपर निर्भर है, कि हम शांति, मानव अधिकार और स्वतंत्रता के शिक्षक बनें, जो हर जन का आदर करता है; साथ ही हम एक सुदृढ़ सामाजिक संबंध सुनिश्चित करें, क्योंकि हर व्यक्ति को अपने भाई–बहनों का कद्र, बिना भेदभाव के करना चाहिए। राष्ट्रीय समुदाय में, किसी को जाति, धर्म या किसी अन्य व्यक्तिगत गुण–चरित्र के आधार पर दूसरों से अलग नहीं करना चाहिए। विभिन्न धर्मों के सदस्य के रूप में, हम सभी एक शिक्षा के प्रचार के लिए बुलाए गए हैं, जो मानव प्राणी का सम्मान करता है और हर व्यक्ति एवं लोगों के बीच आपसी प्रेम का संदेश देता है। हम मुख्य रूप से यह सुनिश्चित करने के लिए उत्तरदायी हैं कि हमारे युवा–वर्ग का निर्माण, जिसपर आनेवाले कल की जिम्मेवारी होगी, इसी मनोकामना के आधार पर हो। यह जिम्मेवारी विशेष रुप से हर परिवार की है, और फिर उनकी जो शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत्त हैं और जो नागरिक एवं धार्मिक अधिकारी हैं, जिनपर यह ध्यान देने का कर्तव्य है कि एक उचित शिक्षा का विकास हो। उन्हें हर व्यक्ति को, उसके विशेष परिस्थति के अनुकूल, उचित शिक्षा प्रदान करने की जरुरत है, विशेषकर नागरिक शिक्षा, जो हर युवक–युवती को, अपने ईद–गिर्द के लोगों के प्रति आदर–सम्मान, और उन लोगों को अपने भाई–बहन के रुप में स्वीकार करने के लिए आमंत्रित करता है, जिनके साथ उसे प्रतिदिन भेदभाव छोड़कर आपसी भाईचारे में रहना है। इसलिए आज यह, अन्य समय की अपेक्षा, ज्यादा आवश्यक

है कि युवाओं को आधारभूत मानवीय, नैतिक और नागरिक शिक्षा दी जाए, जो व्यक्ति एवं समाज दोनों के लिए अति–आवश्यक है। उन्हें, सभी असभ्यताओं के उदाहरण याद दिलाए जाएँ, जो सामाजिक जीवन में उनकी राह खड़े हैं; और जो समाज एवं समस्त संसार के सार्वजनिक अच्छाई और विकास के लिए ज़ोखिम और चुनौतियाँ हैं।

4. इस मनोकामना के साथ, ईसाई और मुस्लिम धर्मावलम्बियों के बीच संवाद का लक्ष्य एवं बढ़ावा, दोनों शैक्षिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में, महत्वपूर्ण समझा जाना चाहिए। इसलिए मानव एवं मानवता की सेवा में सारी शक्तियाँ लगाई जा सकती हैं, जिससे युवा–पीढ़ीयाँ परस्पर विरोधी सांस्कृतिक एवं धार्मिक रोड़ा ना बनें, बल्कि एक मानवता में यथार्थ भाई–बहन बनें। संवाद ही एक साधन है, जो हमें असीमित सर्पिल आकार संघर्षों और अनेक तनावपूर्ण स्थितियों से, जो हमारे समाज को कलंकित करते हैं, बचने में मदद दे सकता है, जिसे सभी जन आपसी शांति और अपने अंगभूत समुदाय में सम्मान और समसरता के साथ जी सकते हैं। इसे प्राप्त करने हेतु, मैं आपसे मेरे इस सम्बोधन पर गौर करने के लिए, सहृदय आग्रह करता हूँ, जिससे, आपसी मिलन और बैचारिक आदान–प्रदान द्वारा, ईसाई और मुस्लिम जन–समुदाय, आपसी सम्मान के साथ मिलकर, सभी लोगों के बीच शांति और उनके उज्वल्ल भविष्य के लिए काम कर सकें; यह आज के युवा लोगों के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण होगा। तब उनमें समाज के प्रति नया विश्वास उत्पन्न होगा और वे इसके नविणीकरण में सम्मिलित होने का फायदा देख सकेंगे। शिक्षा एवं उदाहरण, उनके लिए आनेवाले दिनों में, भरोसे का एक उद्गम स्वरुप होगा।

5. यह मेरा सुदृढ़ भरोसा है, जिसे मैं आपके साथ बाँटता रहा हूँ; कि ईसाई और मुसलमान अपने विशिष्ट अच्छाईयों के आदान–प्रदान के लिए, अपने मैत्रीपूर्ण और रचनात्मक संबंध को और ज्यादा मजबूत करें, और यह कि वे अपने धर्मावलम्बियों के धार्मिक जीवन के गुणात्मक सुदृढ़ता पर विशेष ध्यान दें।

प्रिय मुसलमान मित्रों, पुनः मैं आपसभों का, आपके इस त्योहार पर हार्दिक अभिवादन करता हूँ, और शांति एवं दया के ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह आपको अच्छा स्वस्थ्य, शांति और समृद्धि प्रदान करे।

Jean Louis Card. Tauran

अध्यक्ष

Mgr Luigi Celata

सचिव